विश्व न्याय मन्दिर

26 मार्च, 2009

प्रभुधर्म के पालने के अनुयायियों को

परमप्रिय मित्रगण,

हमें मालूम हुआ है कि बहाई समुदाय के कुछ सदस्यों के पास अधिकारियों का यह फरमान पहुँचाया गया है कि एक दस्तावेज पर वे दस्तख़त करें और यह लिखें कि अगर उन्हें कहा भी जायेगा तो वे किसी भी बहाई गतिविधि में शामिल नहीं होंगे। अगर इस रिपोर्ट की पुष्टि हो जाती है तो कुछ अधिकारियों की यह मंशा जाहिर हो जाती है कि आपके बहाई जीवन जीने की स्वतंत्रता अथवा अपनी आस्था की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित कर आपके ऊपर दबाव डाला जा रहा है, खासकर तब जब यारान और खादिमिन के काम-काज को बंद कर दिया गया हो। इस प्रकार सभी धर्मों की शिक्षाओं और मानव अधिकारों की अवहेलना कर वे अपने ही देश के एक वर्ग के लोगों के विचारों और विवेक की स्वतंत्रता से उन्हें वंचित रखना चाहते हैं।

बहाउल्लाह की शिक्षाओं को स्वीकार करने का मतलब है कि व्यक्ति अपने आध्यात्मिक विकास के प्रति वचनबद्ध होता है, एक जीवंत समुदाय के निर्माण में अपना योगदान देता है और जनसामान्य के हित में कार्य करता है। बहाई समुदाय के सामूहिक कार्य में व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर के काम-काज का प्रबंधन, उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं का आयोजन तथा अन्य बहाई बैठकों में शामिल होना, बच्चों किशोरों और युवाओं के लिये नैतिक शिक्षा की कक्षाओं का आयोजन, उनके आध्यात्मिक और सामाजिक विकास के लिये उनका मार्गदर्शन तथा विज्ञान और कला के उनके ज्ञान को समृद्ध करना और एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जो उन्हें परस्पर सहयोग और समाज की सेवा के लायक बना सके। विज्ञान और कला का ज्ञान प्राप्त कने की स्वतंत्रता और नागरिक कानूनों के दायरे में रहते हुए अपने धर्म के विधानों के अनुकूल कार्य करना, अपनी बुद्धि और विवेक के अनुसार निर्णय लेना और वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के प्रति सम्मान रखना प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। इस स्वतंत्रता को बाधित अथवा प्रतिबंधित करने वाला कोई भी काम न केवल मौलिक मानवाधिकार का उल्लंघन है बल्कि उन सभी अंतर्राष्ट्रीय प्रावधानों और मान्यताओं का हनन भी है जो इन अधिकारों को परिभाषित करता है। यह इस्लाम के न्याय सिद्धांत के विरुद्ध भी है। ऐसे सिद्धांतों को देखते हुए किसी व्यक्ति को किसी दस्तावेज पर दस्तख़त करने के लिये बाध्य करना, खासकर यह घोषणा करते हुये कि उसके धर्म के लिये जो आवश्यक है उससे वे परहेज करेंगे, निश्चित रूप से विवेक की स्वतंत्रता का उल्लंघन है।

आपकी दृढ़ता हमें प्रेरित करती है और पवित्र समाधियों में की गई हमारी प्रार्थनायें बराबर आपके साथ हैं।

-विश्व न्याय मन्दिर